30-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - ज्ञान को बुद्धि में धारण कर आपस में मिलकर क्लास चलाओ, अपना और औरों का कल्याण कर सच्ची कमाई करते रहो"

प्रश्नः- तुम बच्चों में कौन-सा अहंकार कभी नहीं आना चाहिए?

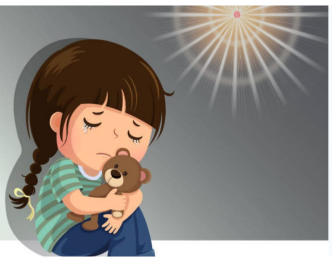

उत्तर:- कई बच्चों में अहंकार आता है कि यह छोटी-छोटी बालकियाँ हमें क्या समझायेंगी। बड़ी बहन चली गई तो रूठकर क्लास में आना बंद कर देंगे। यह हैं माया के विघ्न। बाबा कहते - बच्चे, तुम सुनाने वाली टीचर के नाम-रूप को न देख, बाप की याद में रह मुरली सुनो। अहंकार में मत आओ।

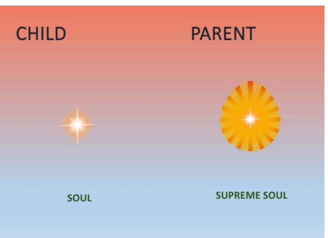

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब बाप जब कहा जाता है तो इतने बच्चों का एक जिस्मानी बाप तो हो नहीं सकता। यह है रूहानी बाप। उनके ढेर बच्चे हैं, बच्चों के लिए यह टेप मुरली आदि सामग्री है। बच्चे जानते हैं अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं पुरुषोत्तम बनने के लिए। यह

भी खुशी की बात है। बाप ही पुरुषोत्तम बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण पुरुषोत्तम हैं ना। इस सृष्टि में ही उत्तम पुरुष, मध्यम और कनिष्ट होते हैं। आदि में हैं उत्तम, बीच में हैं मध्यम, अन्त में हैं कनिष्ट। हर चीज़ पहले नई उत्तम फिर मध्यम फिर कनिष्ट अर्थात् पुरानी बनती है। दुनिया का भी ऐसे है। तो जिन-जिन बातों पर मनुष्यों को संशय आता है, उस पर तुमको समझाना है। बहुत करके ब्रह्मा के लिए ही कहते हैं कि इनको क्यों बिठाया है? तो उनको झाड़ के चित्र पर ले आना चाहिए। देखो नीचे भी तपस्या कर रहे हैं और ऊपर में एकदम अन्त में बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में खड़े हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। यह बातें समझाने वाला बड़ा अक्लमंद चाहिए। एक भी बेअक्ल निकलता है, तो सभी बी.के. का नाम बदनाम हो जाता है। पूरा समझाना आता नहीं है। भल कम्पलीट पास तो अन्त में ही होते हैं, इस समय 16 कला सम्पूर्ण कोई बन न सके लेकिन समझाने में नम्बरवार जरूर होते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रीत नहीं है तो विप्रीत बुद्धि ठहरे ना।

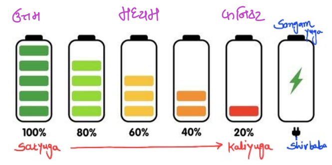

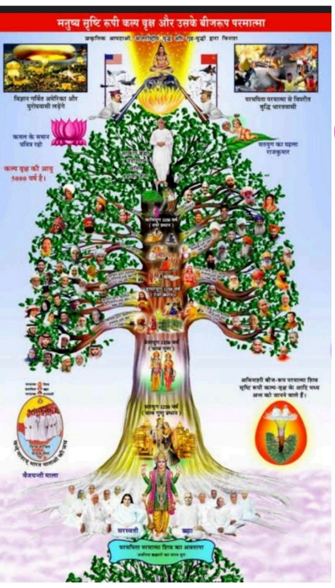

Alert...! Said it before 1969, It is Now 2025

M. Imp.

Definition of..

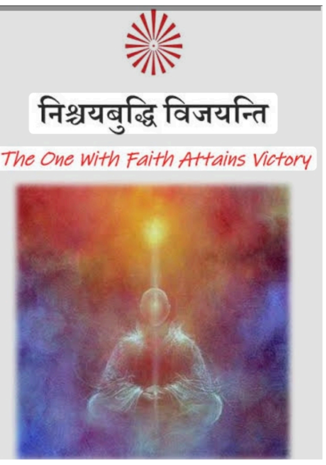

इस पर तुम समझा सकते हो जो प्रीत बुद्धि हैं वह विजयन्ती और जो विप्रीत बुद्धि हैं वह विनशन्ती हो जाते हैं। इस पर भी कई मनुष्य बिगड़ते हैं, फिर कोई न कोई इल्ज़ाम लगा देते हैं। झगड़ा-फसाद मचाने में देरी नहीं करते हैं। कोई कर ही क्या सकते हैं। कभी चित्रों को आग लगाने में भी देरी नहीं करेंगे। बाबा राय भी देते हैं - चित्रों को इन्श्योर करा दो। बच्चों की अवस्था को भी बाप जानते हैं, क्रिमिनल आई पर भी बाबा रोज़ समझाते रहते हैं। लिखते हैं - बाबा, आपने जो क्रिमिनल आई पर समझाया है यह बिल्कुल ठीक कहा है। यह दुनिया तमोप्रधान है ना। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं। वो तो समझते हैं कलियुग अभी रेगड़ी पहन रहा है (घुटनों के बल चल रहा है) अज्ञान नींद में बिल्कुल सोये हुए हैं। कभी-कभी कहते भी हैं यह महाभारत लड़ाई का समय है तो जरूर भगवान कोई रूप में होगा। रूप तो बताते नहीं। उनको जरूर किसमें प्रवेश होना है। भाग्यशाली रथ गाया जाता है। रथ तो आत्मा का अपना होगा ना। उसमें आकर प्रवेश करेंगे। उनको कहा जाता

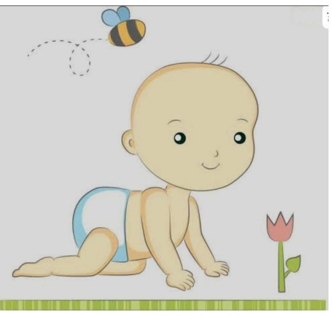

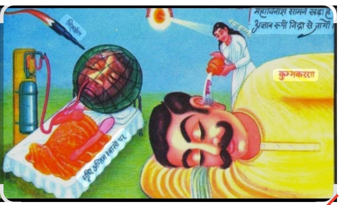

30-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

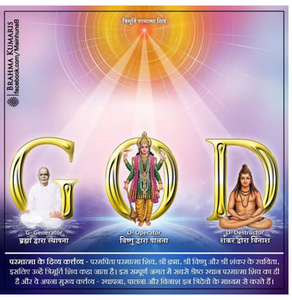

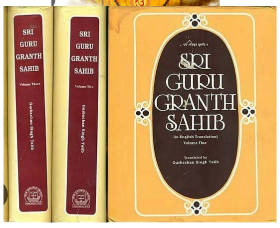

है भाग्यशाली रथ। बाकी वह जन्म नहीं लेते हैं। इनके ही बाजू में बैठ ज्ञान देते हैं। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। त्रिमूर्ति चित्र भी है। त्रिमूर्ति तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को कहेंगे। जरूर यह कुछ करके गये हैं। जो फिर रास्तों पर, मकान पर भी त्रिमूर्ति नाम रखा है। जैसे इस रोड को सुभाष मार्ग नाम दिया है। सुभाष की हिस्ट्री तो सब जानते हैं। उन्हों के पीछे बैठ हिस्ट्री लिखते हैं। फिर उनको बनाकर बड़ा कर देते हैं। कितनी भी बड़ाई बैठ लिखें। जैसे गुरुनानक का पुस्तक कितना बड़ा बनाया है। इतना उसने तो लिखा नहीं है। ज्ञान के बदले भक्ति की बातें बैठ लिखी हैं। यह चित्र आदि तो बनाये जाते हैं समझाने के लिए। यह तो जानते हैं इन आंखों से जो कुछ दिखाई पड़ता है यह सब भस्म हो जाना है। बाकी आत्मा तो यहाँ रह न सके। जरूर घर चली जायेगी। ऐसी-ऐसी बातें कोई सबकी बुद्धि में बैठती थोड़ेही है।

Click

अगर धारणा होती है तो क्लास क्यों नहीं चलाते। 7-8 वर्ष में ऐसा कोई तैयार नहीं होता जो क्लास चला सके। बहुत जगह ऐसे चलाते भी हैं। फिर भी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समझते हैं माताओं का मर्तबा ऊंच है। चित्र तो बहुत हैं फिर मुरली धारण कर उस पर थोड़ा समझाते हैं। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बहुत सहज है। फिर पता नहीं क्यों ब्राह्मणी की मांगनी करते हैं। ब्राह्मणी कहाँ गई तो बस रूठकर बैठ जाते हैं। क्लास में नहीं आते, आपस में खिटपिट हो जाती है। मुरली तो कोई भी बैठ सुना सकते हैं ना। कहेंगे फुर्सत नहीं। यह तो अपना भी कल्याण करना है तो औरों का भी कल्याण करना है। बहुत भारी कमाई है। सच्ची कमाई करानी है जो मनुष्यों का हीरे जैसा जीवन बन जाये। स्वर्ग में सब जायेंगे ना। वहाँ सदैव सुखी रहते हैं। ऐसे नहीं, प्रजा की आयु कम होती है। नहीं, प्रजा की भी आयु बड़ी होती है। वह है ही अमर लोक। बाकी पद कम-जास्ती होते हैं। तो कोई भी टॉपिक पर क्लास कराना चाहिए। ऐसे क्यों कहते हैं अच्छी ब्राह्मणी चाहिए। आपस में क्लास चला सकते हैं। रड़ी नहीं मारनी चाहिए। कोई-कोई को अहंकार आ जाता है - यह छोटी-छोटी बालकियां क्या समझायेंगी? माया के विघ्न भी बहुत आते हैं। बुद्धि में नहीं

बैठता।

बाबा तो रोज़ समझाते रहते हैं, शिवबाबा तो टॉपिक पर नहीं समझायेंगे ना। वह तो सागर है। उछलें मारते रहेंगे। कभी बच्चों को समझाते, कभी बाहर वालों के लिए समझाते। मुरली तो सबको मिलती है। अक्षर नहीं जानते हैं तो सीखना चाहिए ना - अपनी उन्नति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। अपना भी और दूसरों का भी कल्याण करना है।

How humble My Brahmababa is...!

यह बाप (ब्रह्मा बाबा) भी सुना सकते हैं ना, परन्तु बच्चों का बुद्धियोग शिवबाबा तरफ रहे इसलिए कहते हैं हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा को ही याद करो। शिवबाबा परमधाम से आये हैं, मुरली सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा तो परमधाम से नहीं आकर सुनाते हैं। समझो शिव-बाबा इस तन में आकर हमको मुरली सुना रहे हैं। यह बुद्धि में याद होना चाहिए। यथार्थ रीति यह बुद्धि में रहे तो भी याद की यात्रा रहेगी ना। परन्तु यहाँ बैठे भी बहुतों का बुद्धियोग इधर-उधर चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। नहीं तो

मधुबन में

गांव याद आयेगा। घरबार याद आयेगा। बुद्धि में यह याद रहता है - शिवबाबा हमको इसमें बैठ पढ़ाते हैं। हम शिवबाबा की याद में मुरली सुन रहे थे फिर बुद्धियोग कहाँ भाग गया। ऐसे बहुतों का बुद्धियोग चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। समझते हो शिवबाबा परमधाम से आये हैं। बाहर गांवड़ों आदि में रहने से यह ख्याल नहीं रहता है। कोई-कोई समझते हैं शिवबाबा की मुरली इन कानों से सुन रहे हैं फिर सुनाने वाले का नाम-रूप याद न रहे। यह ज्ञान सारा अन्दर का है। अन्दर में ख्याल रहे शिवबाबा की मुरली हम सुनते हैं। ऐसे नहीं, फलानी बहन सुना रही है। शिव-बाबा की मुरली सुन रहे हैं। यह भी याद में रहने की युक्तियां हैं। ऐसे नहीं कि जितना समय हम मुरली सुनते हैं, याद में हैं। नहीं, बाबा कहते हैं - बहुतों की बुद्धि कहाँ-कहाँ बाहर में चली जाती है। खेतीबाड़ी आदि याद आती रहेगी। बुद्धि योग कहाँ बाहर भटकना नहीं चाहिए। शिवबाबा को याद करने में कोई तकलीफ थोड़ेही है। परन्तु माया याद करने नहीं देती है। सारा समय

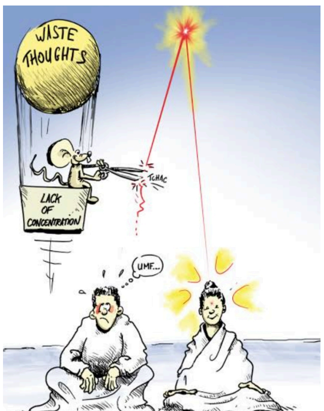

शिवबाबा की याद रह नहीं सकती, और-और ख्यालात आ जाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है ना। जो बहुत नज़दीक वाले होंगे उनकी बुद्धि में अच्छी रीति बैठेगा। सब थोड़ेही 8 की माला में आ सकेंगे। ज्ञान, योग, दैवीगुण यह सब अपने में देखना है। हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है? माया के वश कोई विकर्म तो नहीं होता है? कोई-कोई बहुत लालची बन जाते हैं। लालच का भी भूत होता है। तो माया की प्रवेशता ऐसी होती है जो भूख-भूख करते रहते हैं - खाऊं-खाऊं पेट में बलाऊं...... कोई में खाने की बहुत आसक्ति होती है। खाना भी कायदे अनुसार होना चाहिए। ढेर बच्चे हैं। अब बहुत बच्चे बनने वाले हैं। कितने ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बनेंगे। बच्चों को भी कहता हूँ - तुम ब्राह्मण बन बैठो। माताओं को आगे रखा जाता है। शिव शक्ति भारत माताओं की जय।

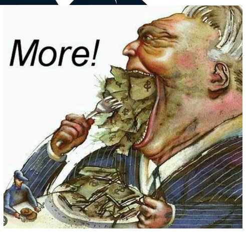

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण हो। यह बातें नया कोई आये

Swamaan

तो समझ न सके। तुम हो सर्वोत्तम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। नया कोई सुने तो कहेंगे स्वदर्शन चक्र तो विष्णु को है। यह फिर इन सबको कहते रहते हैं, मानेंगे नहीं इसलिए नये-नये को सभा में एलाऊ नहीं करते। समझ नहीं सकेंगे। कोई-कोई फिर बिगड़ पड़ते हैं - क्या हम बेसमझ हैं जो आने नहीं दिया जाता है

क्योंकि और-और सतसंगों में तो ऐसे कोई भी जाते रहते हैं। वहाँ तो शास्त्रों की ही बातें सुनाते रहते हैं। वह सुनना हर एक का हक है। यहाँ तो सम्भाल रखनी पड़ती है। यह ईश्वरीय ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठता तो बिगड़ पड़ते हैं। चित्रों की भी सम्भाल रखनी पड़ती है। इस आसुरी दुनिया में अपनी दैवी राजधानी स्थापन करनी है। जैसे

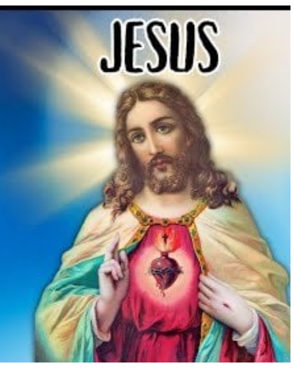

क्राइस्ट आया अपना धर्म स्थापन करने। यह बाप दैवी राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हिंसा की कोई बात नहीं है। तुम न काम कटारी की और न स्थूल हिंसा कर सकते हो। गाते भी हैं मूत पलीती कपड़ धोए। मनुष्य तो बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं। बाप आकर घोर अन्धियारे से घोर सोझरा

That's Why All are saying this....

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

Translation

From untruth, lead me to the truth;
From darkness, lead me to the light;
From death, lead me to immortality.

- Brihadaranyaka Upanishad

Points: ज्ञान योग धार .imp.

Refer Last page - Matrix movie Song Explained

करते हैं। फिर भी कोई-कोई बाबा कहकर फिर मुँह मोड़ देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। भगवान विश्व का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं, ऐसी पढ़ाई को छोड़ दे तो उनको कहा जाता है महामूर्ख। कितना जबरदस्त खज़ाना मिलता है। ऐसे बाप को थोड़ेही कभी छोड़ना चाहिए। एक गीत भी है - आप प्यार करो या ठुकराओ, हम आपका दर कभी नहीं छोड़ेंगे। बाप आये ही हैं - बेहद की बादशाही देने। छोड़ने की तो बात ही नहीं। हाँ, लक्षण अच्छे धारण करने हैं। स्त्रियाँ भी रिपोर्ट लिखती हैं - यह हमको बहुत तंग करते हैं। आजकल लोग बहुत-बहुत खराब हैं। बड़ी सम्भाल रखनी चाहिए। भाइयों को बहनों की सम्भाल रखनी है। हम आत्माओं को कोई भी हालत में बाप से वर्सा जरूर लेना है। बाप को छोड़ने से वर्सा खलास हो जाता है। निश्चयबुद्धि विजयन्ती, संशयबुद्धि विनशन्ती। फिर पद बहुत कम हो जाता है। ज्ञान एक ही ज्ञान सागर बाप दे सकते हैं। बाकी सब है भक्ति। भल कोई कितना भी अपने को ज्ञानी समझें परन्तु बाप कहते हैं सबके

Definition of..

Mind Very Well...

Attention Please...!

Exclusive Authority of Shivbaba..

समजा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पास शास्त्रों और भक्ति का ज्ञान है। सच्चा ज्ञान किसको कहा जाता है, यह भी मनुष्य नहीं जानते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

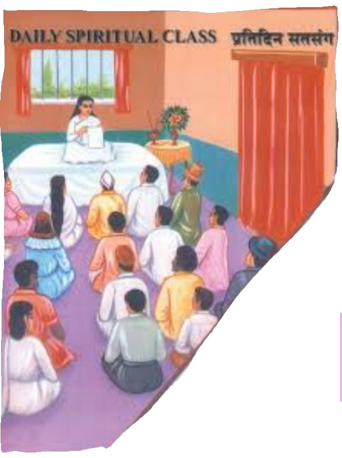

1) ध्यान रखना है कि मुरली सुनते समय बुद्धियोग बाहर भटकता तो नहीं है? सदा स्मृति रहे कि हम शिवबाबा के महावाक्य सुन रहे हैं। यह भी याद की यात्रा है। *Most imp.*

2) अपने आपको देखना है कि हमारे में ज्ञान-योग और दैवी गुण हैं? लालच का भूत तो नहीं है? माया के वश कोई विकर्म तो नहीं होता है?

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

30-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- निमित्त भाव की स्मृति से हलचल को समाप्त करने वाले सदा अचल-अडोल भव

Finale Achievement

निमित्त भाव से अनेक प्रकार का मैं पन, मेरा पन सहज ही खत्म हो जाता है।

यह स्मृति सर्व प्रकार की हलचल से छुड़ाकर अचल-अडोल स्थिति का अनुभव कराती है।

सेवा में भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्योंकि निमित्त बनने वालों की बुद्धि में सदा याद रहता है कि "जो हम करेंगे हमें देख सब करेंगे"।

सेवा के निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर आना। स्टेज तरफ स्वत: सबकी नजर जाती है। तो यह स्मृति भी सेफ्टी का साधन बन जाती है।

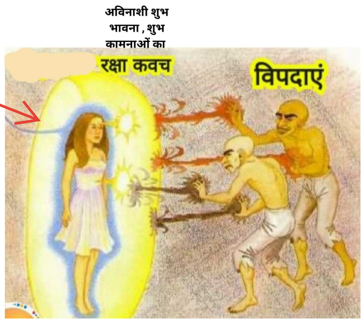

स्लोगन:- सर्व बातों में न्यारे बनो तो परमात्म बाप के सहारे का अनुभव होगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

30-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

वर्तमान समय भटकती हुई आत्माओं को एक तो शान्ति चाहिए, दूसरा रूहानी स्नेह चाहिए। प्रेम और शान्ति का ही सब जगह अभाव है इसलिए जो भी प्रोग्राम करो उसमें

पहले तो बाप के सम्बन्ध के स्नेह की महिमा करो और फिर उस प्यार से आत्माओं का सम्बन्ध जोड़ने के बाद शान्ति का अनुभव कराओ। प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप दोनों का बैलेन्स हो।

52

फाइनल पेपर

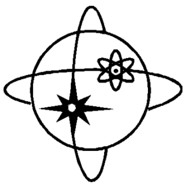

अब करना क्या है? विशेष कमज़ोरी यह है जो हर शक्ति को वा हर ज्ञान की युक्ति को सुनते हुए वा मिलते हुए स्वयं के प्रति यूज नहीं करते अर्थात् अभ्यास में नहीं लाते। सिर्फ वर्णन करने तक लाते। लेकिन अन्तर्मुख हो हर शक्ति की धारणा करने के अभ्यास में जाओ। जैसे कोई नई इन्वेंशन (आविष्कार) करने वाला व्यक्ति दिन रात उसी इन्वेंशन की लगन में खोया हुआ रहता है वैसे हर शक्ति के अभ्यास में खोए हुए रहना चाहिए। जैसे सहनशक्ति वा सामना करने की शक्ति किसको कहा जाता है? सहन शक्ति से प्राप्ति क्या होती है, सहनशक्ति को किस समय यूज किया जाता है? सहनशक्ति न होने के कारण किस प्रकार के विघ्नों के वशीभूत हो जाते हैं? अगर कोई माया का रूप क्रोध के रूप में सामना करने आये तो किस रीति से विजयी बन सकते हो? कौन-कोन सी परिस्थितियों के रूप में माया सहनशक्ति के पेपर ले सकती है? वन इन एडवान्स (पहले से ही) विस्तार से बुद्धि द्वारा सामने लाओ। रीयल पेपर हॉल में जाने के पहले स्वयं का मास्टर बन स्वयं का पेपर लो, तो रीयल इम्तहान में कभी फेल नहीं होंगे। ऐसे एक-एक शक्ति के विस्तार और अभ्यास में जाओ। अभ्यास कम करते हैं, 'व्यास'

सब बन गए हो, लेकिन अभ्यास नहीं करते हो। इसी प्रकार स्वयं को बिज़ी (व्यस्त) रखने नहीं आता, इसलिए माया आपको बिज़ी कर देती है। अगर सदा अभ्यास में बिजी रहो तो व्यर्थ संकल्पों की कम्पलेन्ट भी समाप्त हो जाए। साथ-साथ आपके अभ्यास में रहने का प्रभाव आपके चेहरे से दिखाई दे। क्या दिखाई देगा? 'अन्तर्मुखी सदा हर्षितमुखी' दिखाई देंगे, क्योंकि माया का सामना करना समाप्त हो जाएगा। समजा? जैसे अनुभवों को बढ़ाते चलने से बार-बार एक ही शिकायत करने से छूट जाएंगे। जैसे सर्वशक्तियों के अभ्यास के लिए सुनाया वैसे ही स्वयं को योगी तू आत्मा कहलाते हो, लेकिन योग की परिभाषा जो औरों को सुनाते हो उसका स्वयं को अभ्यास है?

पूछो अपने आप से...

21/8/25

(18.06.1977)

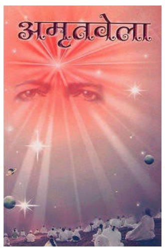

(ऊ) अमृतवेले से गीत गाना शुरू करते हो। दिनचर्या में उठते भी गीत से हो। तो बाप के वा अपने श्रेष्ठ जीवन की महिमा के गीत गाओ। ज्ञान के गीत गाओ। सर्व प्राप्तियों के गीत गाओ। यह गीत गाना नहीं आता? आता है ना! तो गीत गाओ और खुशियों में नाचो। खुशियों में नाचते हर कार्य करो। तो सारा दिन गीत गाते रहो, खुशियों में नाचते रहो।

30/8/25

Neodämmerung

Neohalf-light

From बृहदारण्यक उपनिषद

अ' सतो मा स' द्गमय
त' मसो मा ज्यो' तिर्गमय,
मृत्यो' र्मामृतं गमये' ति॥

1 From the unreal (delusion) lead me to the real (truth)
2 From the darkness lead me to the light
3 From death lead me to immortality

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते
यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं

He that perceives both knowledge together with ignorance [knows that] with ignorance crosses over death and with knowledge immortality is enjoyed
In him are woven the sky and the earth and all the regions of the air

मुरली is the tool to enjoy immortality

That's why we must not miss the murli

मनः सह प्राणैश्च सर्वैः
तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो
विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः

And in him rest the mind and all the powers of life
Know him as the One and leave aside all other words
He is the bridge of immortality

(The one & supreme Lord shiva)

इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्त्वमुत्तमम्
सत्त्वादधि महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम्

Beyond the senses is the mind, and beyond the mind is reason, its essence
Beyond reason is the Spirit in man, and beyond this is the Spirit of the Universe, the evolver of all.

Lord shiva

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्

When the five senses and the mind are still
And reason itself rests in silence, then begins the Path supreme.

Path supreme

य यायाय यदा यदाया या
य यायाय यदा यदा यदा
यदा यदा यदा यदा यदा

One advance so on and so forth travel to find out
So on and so forth
So on and so forth

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे

And when he is seen in his immanence and transcendence, then the ties that have bound the heart are unloosened
The doubts of the mind vanish, and the law of Karma works no more

Click

Depicted in Hollywood (very famous) Movie Matrix

our finale stage to Achieve (कर्मातीत)
Brahmababa has Achieved this

Feel it....!

How Lucky and great we all are...!

We have the "supreme Path" to Attain 'कर्मातीत stage'

HINDU Upanishad	Samskrit Verse	Pronounciation	Meaning
Brihadaranyaka Upanishad (1.3.28)	असतो मा सद्गमय	asato mā sad gamaya	from unreal/delusion lead me to the real (truth)
	तमसो मा ज्योतिर्गमय	tamaso mā jyotir gamaya	from darkness (ignorance) lead me to the light (knowledge)
	मृत्योर्मामृतं गमयेति	mṛtyor mā amṛtaṁ gamaya	from Death Lead me to Immortatlity
Isha Upanishad (11)	विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह	vidyāñcāvidyāñca yastadvedobhayaṁ saha	One Who Practices Vidya (meditation of Unmanifested) and Avidya (rituals) Together
	अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते	avidyayā mṛtyuṁ tīrtvā vidyayā'mṛtamaśnute	Thru Avidya he crosses over Death and thru Vidya Attains Immortality
Mundaka Upanishad (2.2.5)	यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं	yasmin dyauḥ pṛthivī cāntarikṣamotaṁ	in that (Eternal Brahm) are woven the Earth, the Entire Antariksha
	मनः सह प्राणैश्च सर्वैः	manaḥ saha prāṇaiśca sarvaiḥ	alongwith the Manas and the Prana
	तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या	tamevaikaṁ jānatha ātmānamanyā	Know that Brahma the Universal Aatman,
	वाचो विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः	vāco vimuñcathāmṛtasyaiṣa setuḥ	abandon all other knowledge, it is the Bridge to Immortality
Katha Upanishad (6.7)	इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्त्वमुत्तमम्	indriyebhyaḥ paraṁ mano manasaḥ sattvamuttamam	Beyond the Senses is the Mind, Beyond Mind is the Intellect
	सत्त्वादधि महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम्	sattvādadhi mahānātmā mahato'vyaktamuttamam	Beyond the Intellect is the Mighty Aatman, beyond Aatman is Universal Brahm
	यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह	yadā pañcāvatiṣṭhante jñānāni manasā saha	When the five senses and the mind are still
	बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्	buddhiśca na viceṣṭate tāmāhuḥ paramāṁ gatim	The Intellect Stops to Work, that is the Highest State as per Thinkers
	या या यदा यदा या या यदा यदा	Ya Ya Yada Yada Ya Ya Yada Yada	Allusion to Smd. Bhagvad Gita 4.7- Yada Yada hi Dharmasya
Mundaka Upanishad (2.2.8)	भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः	bhidyate hṛdayagranthiśchidyante sarvasaṁśayāḥ	The Knots of in the Heart are Cut and all the Doubts are Cast away
	क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे	kṣīyante cāsya karmāṇi tasmin dṛṣṭe parāvare	Karmic Cycle ceases, Just by seeing that Divine

Click
@rapperpandit
Rapperpandit

Key Sanskrit verses in Navras with Hindi meaning:

asato mā sad gamaya

Hindi meaning: असत् (असत्य/भ्रम) से सत्य की ओर ले चलो.

tamaso mā jyotir gamaya

Hindi meaning: तम (अंधकार/अज्ञान) से ज्योति (प्रकाश/ज्ञान) की ओर ले चलो.

mṛtyor mā amṛtam gamaya

Hindi meaning: मृत्यु से अमृतत्व (अमरत्व/मोक्ष) की ओर ले चलो.

Brihadaranyak Upanishad (1.3.28)

vidyām cāvidyām ca yaḥ
tad veda ubhayam saha
avidyayā mṛtyuṃ tīrtvā
vidyayāmṛtam aśnute

Isha upanishad (11)

Hindi meaning: जो व्यक्ति विद्या (ज्ञान) और अविद्या (कर्म/उपासनात्मक कर्म) दोनों को साथ-साथ जानता है—वह अविद्या (कर्म) से मृत्यु को पार करता है और विद्या (ज्ञान) से अमृतत्व को प्राप्त करता है.

yasmin dyaur pṛthivī cāntarikṣam otaṃ
manaḥ saha prāṇaiś ca sarvaiḥ
tam evaikaṃ janathātmānam
anya vācaḥ vimuncatha
amṛtasya eṣa setuḥ

Mundak upanishad (2.2.5)

परमात्मा शिव

Hindi meaning: जिसमें आकाश, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, मन और समस्त प्राण शक्तियाँ ओत-प्रोत हैं—उसी एक आत्मा को जानो, अन्य वचनों को त्यागो; वही अमृतत्व का सेतु है.

indriyebhyaḥ paraṃ mano
manasaḥ sattvam uttamam
sattvād adhi mahān ātmā
mahato vyaktam uttamam

Kathopnishad (6.7)

Hindi meaning: इन्द्रियों से परे मन है; मन से श्रेष्ठ बुद्धि/सत्त्व है; सत्त्व से ऊपर महत्त्व/महान आत्मा (हिरण्यगर्भ) है; और उससे भी श्रेष्ठ परम प्रकट तत्त्व (परमात्मा) है.

← ultimate Truth

yadā pañcāvatiṣṭhante
jñānāni manasā saha
buddhiś ca na viceṣṭate
tam āhuḥ paramāṃ gatim

Hindi meaning: जब पाँचों इन्द्रियाँ और मन स्थिर हो जाते हैं, और बुद्धि भी विचलित नहीं होती—तभी उसे परम गति (मोक्ष) कहते हैं.

bhidyate hṛdaya-granthis
chidyante sarva-saṃśayāḥ
kṣīyante cāsya karmāṇi
tasmin dṛṣṭe parāvare

Mundak upanishad (2.2.8)

Hindi meaning: उस परम (जो निकट और दूर दोनों है) के प्रत्यक्ष दर्शन पर हृदय के गाँठें कट जाती हैं, सभी संशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, और उसके कर्म क्षीण हो जाते हैं.

← कर्मातीत अवस्था

oṃ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

Hindi meaning: ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः — तीन स्तरों की शान्ति का आह्वान (दैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक).